शुष्क बागवानी समाचार

भाकृअनुप–केन्द्रीय शुष्क बागवानी संस्थान

बीछवाल– बीकानेर– 334006 (राजस्थान)

अंक 15 क्रमांक– 1 जनवरी– जून, 2015

संस्थान में डॉ. एन. के. कृष्णकुमार, उप महानिदेशक (बागवानी विज्ञान), भाकृअनुप, नई दिल्ली का भ्रमण

भा.अनुप–केन्द्रीय शुष्क बागवानी संस्थान में दिनांक 20 मार्च, 2015 को भारतीय .षि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली के बागवानी विज्ञान विभाग के उप महानिदेशक डॉ. एन. के. .ष्ण कुमार ने संस्थान का भ्रमण किया। इस दौरान उन्होंने नव निर्मित 25 लाख लीटर जल क्षमता की डिग्गी को संस्थान को समर्पित किया। उन्होंने बारहवीं योजना के दौरान किए गये निर्माण कार्यों की प्रशंसा करते हुए संतोष प्रकट किया। पानी की कमी को देखते हुए उन्होंने पूरे संस्थान में बूंद–बूंद सिंचाई प्रणाली अपनाने के निर्देश दिए। वैज्ञानिक गृह का उद्घाटन करते हुए उन्होंने कहा कि इन संसाधनों के अनुरक्षण का दायित्व आप सभी का है अतः इसे अच्छी तरह से रखा जाना चाहिए। इसके बाद उप महानिदेशक महोदय ने जैव प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला भवन को संस्थान को समर्पित करते हुए कहा कि जैव प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में यह एक बहुत ही उच्च कोटि की सुविधा का विकास इस संस्थान में हुआ है, इसका समुचित लाभ उठाया जाना चाहिए। इस प्रयोगशाला द्वारा अनुसंधान को आगे बढ़ाते हुए रोगमुक्त पौधों का विकास करके न केवल इस क्षेत्र की वरन् देश अन्य शुष्क क्षेत्रों में ऊतक संवर्धित पौधों के द्वारा कायापलट की जा सकती है। इस अवसर पर उन्होंने संस्थान में निर्मित की जाने वाली चारदिवारी की आधारशिला रखी। उन्होंने कहा कि चारदिवारी से संस्थान को जंगली पशुओं आदि से सुरक्षा मिलेगी। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डॉ. सतीश कुमार शर्मा, बीकानेर स्थित भा.अनुप के राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र के निदेशक डॉ. एन. वी. पाटिल एवं उपकेन्द्रों के अध्यक्ष तथा संस्थान के फसल उत्पादन विभाग के अध्यक्ष डॉ. बी. डी. शर्मा, फसल सुधार विभाग के अध्यक्ष डॉ. धुरेन्द्र सिंह, केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग के कार्यपालक अभियन्ता सहित अन्य अभियन्ता, अन्य गणमान्य लोग, अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे। उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए उप महानिदेशक महोदय ने कहा कि शुष्क व अर्धशुष्क बागवानी अनुसंधान के क्षेत्र में यह संस्थान अग्रणी भूमिका निभा रहा है। उन्होंने जैविक–अजैविक प्रतिदाब स्थिति के लिए तकनीकियों को विकसित करने पर जोर दिया। संस्थान द्वारा विगत दो दशकों के दौरान किए गये कार्यों की सराहना की तथा उप महानिदेशक ने आगे भी अच्छा कार्य करने की उम्मीद जतायी।

अनुसंधान ज्योति

1. बीकानेर

खेजड़ी के बीजों में कीट का प्रकोप : संस्थान की कीट–विज्ञान प्रयोगशाला में खेजड़ी की सांगरी में कीट के प्रकोप को दर्ज किया गया। यह बीटल कारयीडोन सेरेटस ऑलिवायर है जो खेजड़ी बीजों को खोखला कर देता है।

चित्रः कीट द्वारा खोखले किए हुए बीज

वयस्क कीटों ने सांगरियों पर अण्डे देती है। इनसे निकलने वाली लट बीजों में सुराख बनाकर उनमें प्रवेश कर उन्हें पूरी तरह खोखला बना देता है। लट विकसित होकर निकली और चौथे आकार तक बीज में ही रहती है तथा बीज के अन्दर या बाहर अपने सिल्क कोकून में प्यूपा बना लेती है।

Grub Pupa Lateral view of adult Adult